पोषण एवं स्वास्थ्य सेवाओं को प्रभावी और सुगम बनाने हेतु आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं का सहभागी क्षमता विकास कार्यक्रम

विकासखंड : बालाघाट, लांजी और बैहर

आयोजन : केयर एवं कम्युनिटी डेव्हलपमेंट सेंटर

सहयोग : महिला एवं बाल विकास विभाग, बालाघाट

अनुक्रमणिका

- भूमिका
- प्रशिक्षण का एजेंडा
- प्रशिक्षण उपस्थिति विववरण
- सहभागी समूह चर्चा
- प्रस्तुतिकरण
  - o आंगनवाड़ी की भूमिका ?
  - o जन समुदाय को केन्द्र से कैसे जोड़ा जा सकता है?
  - o हम कुपोषण को कैसे कम कर सकते है ?
  - o आंगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों की उपस्थिति कैसे बढ़ाये?
  - o प्रभावी गृह भेंट कैसे करे ?
  - o टोले मजरे को आकर्षित करने एवं केन्द्रो में बच्चों की संख्या बढ़ाने हेतु
  - o कुपोषण को कैसे कम कर सकते हैं ?
  - o 6 माह से 3 वर्ष के बच्चों को पोषण आहार कैसे पहुंचाया जाये ?
- अनुशंसाएँ

भूमिका

ग्रामीण समुदाय में पोषण और स्वास्थ्य संदर्भ सेवाओं को सुलभ बनाने में आंगनवाडी केद्रों और विशेषरूप से आंगनवाडी बहनजी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जानकार, सक्षम और संवेदनशील ऑगनवाडी बहनजी गॉवों में बच्चों और महिलाओं के पोषण और स्वास्थ्य की बखूभी देखभाल कर सकती है। गॉव स्तर की आंगनवाडी कार्यकर्त्ता आई.सी.डी.एस. की वह कडी है जिसके कंधों पर संपूर्ण विभाग का दारोमदार है एक तरह से यह विभाग की नींव है। विभाग की किसी भी योजना को अमलीजामा पहनाने में इस बहनजी की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, चाहे पोषण की गतिविधियॉ हों, बच्चों को अनौपचारिक शिक्षा देनी हो या लाडली लक्ष्मी जैसी किसी भी योजना का कियांवयन हो आंगनवाडी कार्यकर्त्ता केंद्रीय भूमिका का निर्वहन करती है। समुदाय के प्रत्येक द्यर और व्यक्ति से आंगनवाडी बहनजी के जीवंत रिश्ते होते हैं।

इन महत्वपूर्ण भूमिकाओं के निर्वहन के लिए आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं में विशिष्ट क्षमताओं का होना आवश्यक है, क्योंकि गॉव में बच्चों और महिलाओं के पोषण और स्वास्थ्य के स्तर को बेहतर बनाने में इनकी सेवाओं की आवश्यकता है। बालाद्याट जिले में 2045 आंगनवाडी केंद्रों की सभी कार्यकर्त्ताओं की क्षमता एक जैसी नहीं है। सबसे प्रमुख समस्या है विषयाधारित जानकारी और क्षमताओं की, साथ ही अपनी भूमिकाओं के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता की।

वर्तमान परिस्थिति बहुत भिन्न हैं आंगनवाडियॉ समुदाय आधारित नहीं बन पायी हैं जिस तरह के जुडाव की कल्पना की गयी है वह दिखायी नहीं देती, 6 माह से 3 वर्ष के बच्चों का आंगनवाडी से संपर्क बेहद कम है बेशक इस आयु वर्ग तक सेवाओं की पॅहुच के लिए परिवार और बच्चों के माता पिता तक पॅहुच आवश्यक है। वर्तमान पोषण स्तर को देखते हुए इसे एक चुनौती के रूप में लेना आवश्यक है क्योंकि सिर्फ सेवाओं को संचालित करने से स्थिति में परिवर्तन नहीं आयेगा, कहीं ना कहीं सेवाओं में गुणवत्ता और समर्पण की आवश्यकता है। महज योजनाओं के संचालन और अभियान दर अभियान आयोजित करने से बात बनेगी नहीं।

कार्यों में गंभीरता और दूरगामी सोच की आवश्यकता है, यहॉ आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं में स्वैच्छिक प्रयासों को बल देने की आवश्यकता है और यह उनकी सकारात्मक सोच और क्षमताओं में वृद्धि से संभव हो सकता है।

आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं के लिए आयोजित विशेष प्रशिक्षण कार्यकमों में इन्हीं सभी विषयों पर चर्चाएं की गयी, सकारात्मक पक्ष यह भी है कि जिस संवदेनशीलता की हम अपेक्षा कर रहे हैं वह आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं में दिखायी देती है। प्रशिक्षण में इनकी सकिय भागीदारी और समस्याओं के निवारण के लिए समूह चर्चा से निकले बिंदुओं से यह संदेश जाता है कि यदि प्रयास, प्रोत्साहन और परिणाम आधारित नियोजन किया जावे तो निश्चित रूप से पोषण और स्वास्थ्य के स्तर में दृश्यमान परिवर्तन लाया जा सकता है।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के क्षमतावर्धन हेतु एक दिवसीय खण्ड स्तरीय कार्यशाला

उद्देश्य

- आ.वा.कार्यकर्ताओं के जानकारी के स्तर को जानना एवं उनकी क्षमता वृद्धि,
- समूदाय में प्रचलित स्तनपान के पारंपरिक तरीकों में सेवा प्रदाताओं के माध्यम से सुधार करना,
- कमजोर केंद्रों की पहचान कर उन्हें उनके केंद्र की स्थिती को सुधारने में सहयोग प्रदान करना,
- प्रभावी गृहभेंट को कैसे सुनिश्चित किया जावे तथा केंद्र में बच्चों की उपस्थिति को बढ़ाने और सतत बनाये रखने के लिए रणनीति बनाना,
- कुपोषण को कम करना विशेष कर प्रथम व द्वितीय ग्रेड के बच्चों पर सामूदायिक सहभागिता सुनिश्चित्त करना।

प्रकिया

- जिला स्तर पर कार्यकम अधिकारी (केयर) के साथ कार्यकम तथा एजेण्डे का निर्धारण ।
- खण्ड स्तर पर परियोजना अधिकारियों के साथ मिलकर तिथी की सुनिश्चित्ता।
- परियोजना अधिकारियों के द्वारा समस्त पर्यवेक्षकों को उक्त दिनॉक पर समस्त कार्यकर्ताओं कि उपस्थिती सुनिश्चित्त करवाने के लिये आदेशित किया गया ।

गतिविधियॉ

- प्रश्नोत्तरी कार्यकम का आयोजन,
- स्तनपान करवाने के सही तरीके की जानकारी तथा मॉ के दूध की महत्ता पर विस्तृत जानकारी,
- सेक्टर की स्थिती एवं ग्रेडिंग पर चर्चा,
- नवजात शिशू की देखभाल,
- महत्वपूर्ण गृह भेंट की आवश्यकता तथा महत्ता,
- विधि प्रदर्शन,
- समूह कार्य एवं प्रस्तुतिकरण

प्रश्नोत्तरी कार्यकम के माध्यम से कार्यकर्ताओं में जानकारी के स्तर का आंकलन करने का प्रयास किया गया, तथा एक बार पुनः सभी को आदर्श व्यवहारों, पोषण स्वास्थ्य दिवस, आई.सी.डी.एस. के उद्देश्यों व सेवाओं के संदर्भ चर्चा की गई ।

स्तनपान कराने के सही तरीके, महत्व तथा इससे होने वाले फायदों (माँ व शिशु) पर सजीव प्रस्तुतीकरण किया गया । वहीं फील्ड स्तर पर आने वाली समस्याओं को कार्यकम अधिकारी (केयर) के माध्यम से जानकारी दी गई । प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि 90 प्रतिशत माताओं को अपने शिशुओं को दूध पिलाने का सही तरीक नही मालूम है, जिसका आंकलन सेवा प्रदाताओं के माध्यम से किया गया जिसमें उन सभी के द्वारा दूध पिलाने के पारंपरिक तरीके ही बताये गये इस पर उनकी समझ विकसित हुई।

संस्था सी. डी. सी. के कार्यकर्त्ताओं के द्वारा आई.सी.डी.एस. के पर्यवेक्षकों के साथ किये गये आ.वा.कें. की ग्रेडिंग की स्थिती पर विस्तृत चर्चा कर उन्हें सेक्टरवार स्थिति से अवगत करवाया गया। जिसमें उन्हें केंद्रों के कमजोर होने के कारणों व स्थिति को सुधारने के लिये किये जाने वाले आवश्यक प्रयासों पर चर्चा की गई।

नवजात शिशुओं की देखभाल पर प्रत्यास्मरण के माध्यम से स्थानीय स्तर पर नवजात शिशुओं की देखभाल को सुनिश्चित्त करना तथा संस्थागत प्रसव को प्रोत्साहित करना साथ ही सुरक्षित प्रसव बढोत्तरी के लिये प्रसव योजना को प्रोत्साहित करते हुये कहां प्रसव करायें पर क्षमता विकसित की गई।

प्रसव योजना के माध्यम से हितग्राही में सुरक्षित प्रसव की समझ विकसित करने कार्यकर्ताओं द्वारा रिकॉर्ड अद्यतन के साथ महत्वपूर्ण समय पर गृह भेंट की सुनिश्चित्ता पर समझ विकसित की गई।

महत्वपूर्ण गृह भेंट के माध्यम से हितग्राही (गर्भवती, धात्री, कुपोषित बच्चों) के धर प्रभावी गृह भेंट,जिसमें जीवन की आशा पुस्तिका का प्रयोग करने की सलाह दी गई साथ ही 14 महत्वपूर्ण गृहभेंट पर पुनः समझ बनाई गई, प्रभावी गृह भेंट पर कार्यकर्ताओं की समझ विकसित करने के लिये प्रशिक्षण के दौरान तीन अलग – अलग समूहों में रोल प्ले करवाया गया ।

विधी प्रदर्शन के सत्र के अंतर्गत आहार किट का प्रयोग किया गया तथा अन्न प्राशन्न कार्यक्रम के दौरान विधी प्रदर्शन की निरंतता को बढ़ावा देकर समूदाय में आहार के प्रभावकारी उपयोग तथा बच्चे को मात्रा, गुणवत्ता व बारंबरता के माध्यम से पौष्टिक आहार के उपयोग को बढावा देकर कुपोषण को प्राथमिक स्तर पर ही रोक लगाने के प्रयास पर जोर दिया गया।

6 माह पश्चात कटोरी चम्मच के प्रयोग के माध्यम से हितग्राहियों को उनके बच्चों को आयु के अनुसार मात्रा, गुणवत्ता व बारंबारता के बारे में जानकारी देने के लिये प्रोत्साहित किया गया ।

कार्यक्रम के समापन के दौरान आने वाले माह में समस्त हितग्राहियों के घर गृह भेंट अभियान करने का संकल्प लिया गया ।
समस्त आंगनवाड़ी प्रशिक्षण के दौरान खण्ड स्तर पर परियोजना अधिकारी एवं पर्यवेक्षकों की उपस्थिती रही ।

प्रशिक्षण में उपस्थिति विवरण

क.	दिनॉक	विकासखंड	उपस्थिति	
			आं.वा.का.	पर्यवेक्षक
1	13.02.08	बालाद्याट	77	6
2	15.02.08	बालाद्याट	109	4
3	16.02.08	बैहर	103	6
4	18.02.08	बैहर	76	5
5	19.02.08	लांजी	145	6

सहभागी समूह चर्चा और प्रस्तुतिकरण

प्रशिक्षण प्रभावी हो इस हेतु प्रतिभागी प्रकियाओं को अपनाया गया, विषयाधारित क्षमताओं को भाषण पद्धति से संपन्न करने के पश्चात सहभागी समूह चर्चाओं के लिए अधिक समय दिया गया इसके बेहतर परिणाम रहे। सहभागी समूह चर्चा में आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं ने गंभीरता से भाग लिया जो कि चर्चाओं से निकले बिंदुओं में दिखायी देता है।

आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं का चर्चा में भाग लेना और उससे परिणाम आधारित बिंदुओं को निकाल कर प्रस्तुत करना अपने आप में महत्वपूर्ण था। आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं को प्रायः इस तरह के अवसर प्राप्त नहीं होते हैं जिसमें उन्हें अपनी बात कहने के अवसर मिले। प्रशिक्षण में इन्हीं अवसरों को सृजित किया गया और अधिकाधिक अवसर आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं को उपलब्ध कराये गये।

समूह चर्चा के प्रश्न भी अनुभव आधारित थे मूलतः ऐसे विषय चर्चा के लिए दिये गये जो व्यवहारिक थे और जिनका सामना कार्यकर्त्ताओं को अपने दैनिक कार्यों के दौरान करना पडता है जैसे :

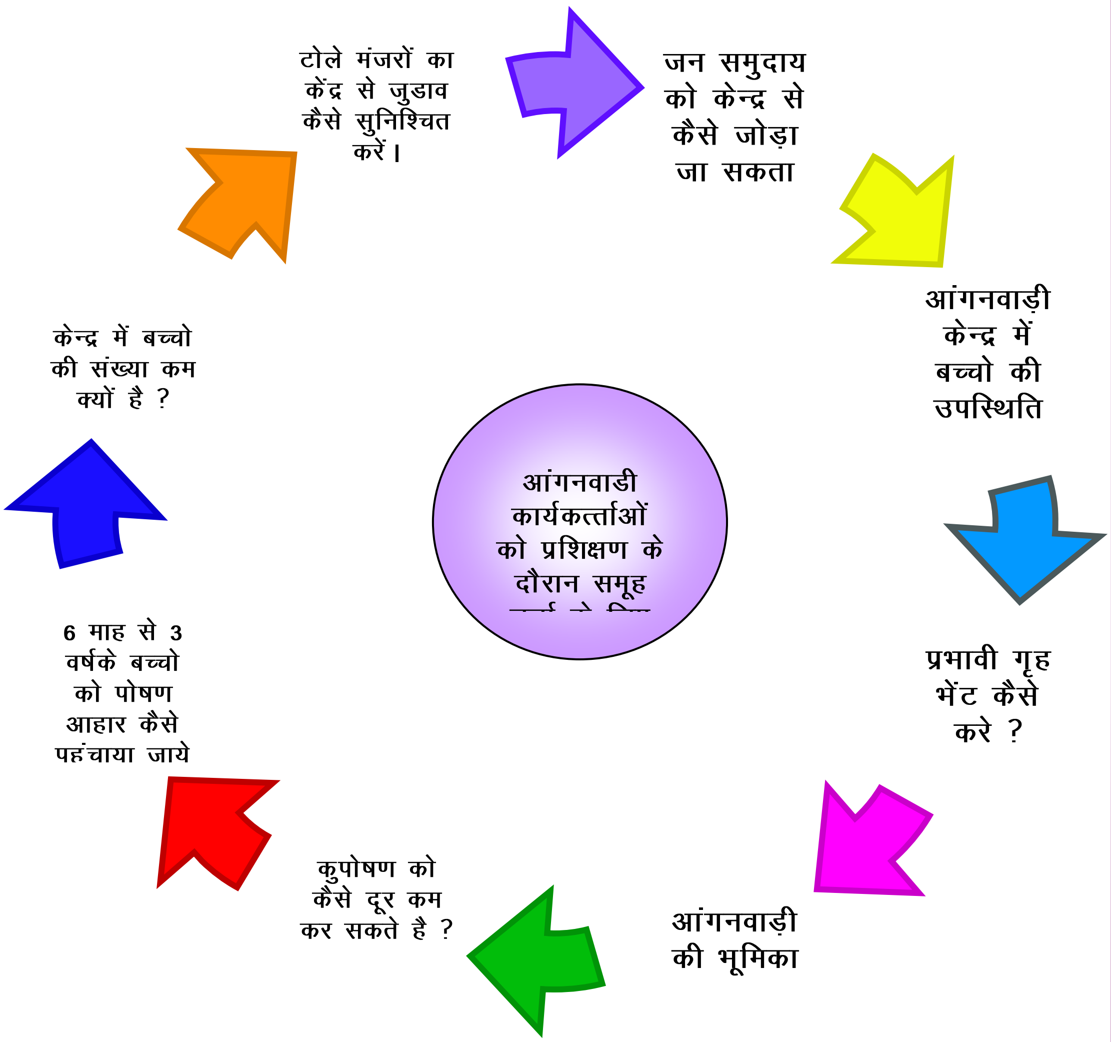
आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण के दौरान समूह
जन समुदाय को केन्द्र से कैसे जोड़ा जा सकता
आंगनवाड़ी केन्द्र में बच्चो की उपस्थिति
प्रभावी गृह भेंट कैसे करे ?
आंगनवाड़ी की भूमिका
कुपोषण को कैसे दूर कम कर सकते है ?
6 माह से 3 वर्षके बच्चो को पोषण आहार कैसे पहंचाया जाये
केन्द्र में बच्चो की संख्या कम क्यों है ?
टोले मंजरों का केंद्र से जुडाव कैसे सुनिश्चित करें।

समूह चर्चा के प्रस्तुतिकरण से निकले बिंदु :

प्रश्न	आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं का प्रस्तुतिकरण
आंगनवाड़ी की भूमिका ?	• आंगनबाडी कार्यकर्ता का व्यवहार सभी से अच्छा होना चाहिये। • आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को अपना कार्य सुचारू रूप से करना चाहिये। • आंगनबाड़ी को समय से खोलना चाहिये। • आंगनबाड़ी कार्यकर्ता जो भी कार्यक्रम करे,वह मनोरंजक रूप से आंगनबाड़ी में करे। • आंगनबाड़ी में सामाजिक नक्शा हर माह अद्यतन करना चाहिये। • आंगनबाड़ी सुव्यवस्थित होना चाहिये। • आंगनबाड़ी कार्यकर्ता जो भी बैठक रखे उसमे मातृत्व सहयोगिनी समिति के सदस्यों की बैठक निरन्तर होना चाहिये।
जन समुदाय को केन्द्र से कैसे जोड़ा जा सकता है?	• एक दल को मिलकर हर एक गांव में संयुक्त रूप से गृहभेंट देकर । • सामाजिक परिवर्तनकर्ता, महिला मण्डल, दाई, मातृ सहयोगिनी समिति, किशोरी मण्डल की हर माह बैठक लेकर । • महिला जागृति शिविर का आयोजन कर। • सास–बहू सम्मेलन का आयोजन हर माह करवाकर । • मंगल दिवस कार्यक्रम में पंचायत के प्रतिनिधि की भागीदारी। • नुक्कड़ नाटक ग्राम स्तर पर । • विभिन्न अभियानो एवं योजनाओं पर रैली निकालकर प्रचार–प्रसार के माध्यम से। • हर ग्राम सभा में जाकर शासन की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देकर। • स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस में पंचायत व जनप्रतिनिधि की भागीदारी । • आंगनवाड़ी केन्द्र में अन्य प्रतियोगिये (ईनामी) स्वस्थ शिशु, स्वस्थ माता प्रतियोगिता कराके । वृद्धि निगरानी (बाल संजीवनी अभियान के दौरान रैली के माध्यम से, मुनादी करवाके।

प्रश्न	आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं का प्रस्तुतिकरण
हम कुपोषण को कैसे कम कर सकते है ?	• गर्भ का पता लगते ही पंजीयन करना । • गर्भावस्था में अच्छी खानपान व देखरेख । • गर्भावस्था में आयरन की टेबलेट टी.टी. के दो टीके। • तुरंत स्तनपान एवं शिशु की सही देख–रेख एवं माता को आयरन की 100 गोली। बच्चे को छः माह तक केवल स्तनपान कराये व शहद घुट्टी पानी आदि न पिलाये। नवजात शिशु को दिन में 8 बार रात में चार बार बैठकर शांत वातावरण में दूध पिलाये। • मंगलवार को मातृ सहयोगिनी की बैठक बुलायेंगे और गांव–गांव की महिलायें को कुपोषण के विषय में बतायेगे। • 6 माह के बाद प्रभावी गृहभेंट देकर उन्हें उपरी आहार के विषय में समझाइश देगे। स्थानीय रूप से घर में प्राप्त सामग्री द्वारा पोष्टिक आहार का विधि प्रदर्शन करेगे प्रतिमाह वजन के लिये माताओं एवं जन समुदाय को जागरूक करना। • साफ–सफाई का ध्यान रखना।
आंगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों की उपस्थिति कैसे बढ़ाये?	• सर्वप्रथम माता–पिता को समझाइस दी जायेगी की बच्चे जो घर का बना खाना खाते है। उस भोजन में जो भी कमी हो उसे पूरा करने के लिए आंगनवाड़ी में पूरक पोषण आहार दिया जाता है उसके बच्चो को जरूर खिलाना चाहिये। • अनौपचारिक शिक्षा बच्चो को खेल–खेल के माध्यम से रूचि अनुसार देना चाहिये। • बच्चो के माता–पिता को बतायेगे बड़े बच्चो के साथ छोटे बच्चो को भी भेजेगे। • बच्चो को प्यार–दुलार से समझा बुझाकर तथा खिलौने देकर बच्चो को आंगनवाड़ी में जन्म दिवस मनाकर बच्चो की संख्या बढ़ायेगे, सामुदायिक बैठक, महिलामंडल का आयोजन कर समझाइस देकर बच्चो की संख्या बढ़ाये। • मातृत्व सहयोगिनी समिति परिवर्तनकर्ता के माध्यम से समझाइस देकर बच्चो की संख्या बढ़ा सकते है। • चित्र खिलौने प्रभावी गीत कहानियों के माध्यम से बच्चो को प्रभावी शिक्षा देकर बच्चो की संख्या बढ़ाई जाती है। •

प्रश्न	आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं का प्रस्तुतिकरण
आंगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों की उपस्थिति कैसे बढ़ाये?	• पिकनिक भ्रमण, जानवरो की आवाज सुनाकर रंग बिरंगे फुल नदी पहाड़ गाड़ी मोटर दिखाकर भ्रमण विभिन्न स्थानो पर ले जाकर बच्चो की संख्या बढ़ा दी जाती है। • मंगल दिवस कार्यक्रम मनाकर जन प्रतिनिधि पंचायत के माध्यम से बच्चो की संख्या बढ़ाई जाती है। • माता–पिता को गृहभेंट के द्वारा समझाईश । • मातृ सहयोगिनी समिति का सहयोग । • आंगनबाड़ी में प्रतियोगिता का आयोजन । • जन–समुदाय का सहयोग । • ग्राम पंचायत की सहभागिता । • अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम में परिवर्तन । • दल नेता द्वारा संयुक्त गृहभेंट । • नई पोषण नीति मेनू चार्ट के बारे में समझाईश । • मंगलदिवस कार्यक्रम पर समझाईश । • बच्चो के सर्वांगीण विकास के बारे में समझाईश।

प्रश्न	आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं का प्रस्तुतिकरण
प्रभावी गृह भेंट कैसे करे ?	• संयुक्त गृह भेंट आंगनवाड़ी दल मातृ सहयोगिनी समिति आशा ए.एन.एम. एवं पचायत के सदस्यों के साथ मिलकर करना चाहिये। • जब भी गृह भेंट करने जाये तो हितग्राही के साथसाथ उसके परिवार से बात करे। • जीवन की आशा पुस्तिका भाग–1, भाग–2 साथ रखे। • कटोरी, चम्मच, पोषण आहार कीट भी रखे। • विधि प्रदर्शन करके दिखाना है, आयरन की गोलियों की जांच खाई है या नही। • प्रसव किट तैयार करी है या नही । • पैसे की व्यवस्था की है या नही । • टीकाकरण कार्ड, मातृ शिशु रक्षा कार्ड से समझाईश । • गृह भेंट के दौरान दी गई समझाईश पर अनुसरण हो रहा है या नही इस बात की पुष्टि करना। • मंगल दिवस कार्यक्रम के विषय पर समझाइस एवं टीकाकरण पर प्रभावी गृहभेंट दलवार करे। • हितग्राही के अलावा घर के अन्य सदस्यों को भी समझाईश दें । (सास–पति) • भेंट के दौरान महिलाओं (हितग्राही) को पौष्टिक आहार देना चाहिये । • गृह भेंट द्वारा शासन की योजनाओं को लाभ मिले। • चार्ट, पोस्टर जीवन की आशा के साथ भेंट करे। • हितग्राही के परिवार सदस्य उपस्थिति में जाए। • आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, नर्स, आशा कार्य, मा.स.स. परिवर्तन कर्ता, पंचायत सदस्य और माह में एक बार पर्यवेक्षक अधिकारी के साथ प्रभावी गृह भेंट इस प्रकार किया जाये कि आंगनबाड़ी की सेवाओं का लाभ उन्हें मिले । परिवार से मुलाकात कर समस्या जानकर उनकी समस्या का समाधान करना। • पोषण आहार पर समझाईश।

प्रश्न	आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं का प्रस्तुतिकरण
टोले मजरे को आकर्षित करने एवं केन्द्रो में बच्चों की संख्या बढ़ाने हेतु	• गृह भेंट (संयुक्त भेंट ए.एन.एम. आशा, पंच) • अनौपचारिक शिक्षा के लिये बढ़े खिलौने होना चाहिये । • सामुदायिक सहभागिता (मातृ सहयोगिनी समिति, महिला मण्डल) एवं व्यवहार परिवर्तन। • प्रत्येक माह स्वस्थ शिशु प्रतियोगिता का आयोजन करेंगे, साफ–सफाई स्पर्धा कर पुरस्कार दिलवाये (पंच प्रतिनिधि) सहयोग। • टोले मजरों में जाकर विधि प्रदर्शन करे। • सूखा राशन वितरण व्यवस्था प्रत्येक माह टोले मजरो में एवं टीकाकरण हो।
कुपोषण को कैसे कम कर सकते हैं ?	• सही समय पर महत्वपूर्ण गृहभेंट । • सही खानपान पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व मिल रहा है या नही । • टीका सही समय पर लगाने से भी कुपोषण रोका जा सकता है। • माताओं को आयरन की गोली खिलाने के लिये प्रेरित करे । • तुरंत स्तनपान 6 माह तक केवल माँ का दूध । • 6 माह से बच्चो को पर्याप्त उपरी आहार घर में खाना बना हुआ मसलकर देना मौसमी फल। • सामुदायिक बैठक में महिला मंडल मातृ सहयोगिनी के सदस्यों को समझाएंगे कि बच्चो को सही समय पर पर्याप्त भोजन दे। • कुपोषण को कम करने के लिये गर्भावस्था से महिलाओं की देखभाल एवं खानपान में विशेष ध्यान देना। • तुरन्त स्तनपान करना । • गर्भवती मां को जन समुदाय से समझाईस देना अज्ञानता के कारण।

प्रश्न	आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं का प्रस्तुतिकरण
6 माह से 3 वर्ष के बच्चों को पोषण आहार कैसे पहुंचाया जाये ?	• जन समुदाय की बैठक में समझाएंगे कि बच्चो को रोज आंगनबाड़ी में भेजे । • जन समुदाय के सहयोग से माताओं को आंगनबाड़ी भेजने के लिये प्रेरित करे। • जो माताएं पोषण आहार लेने के लिये नहीं आती उनको मातृ सहयोगिनी समिति, पंच–सरपंच के साथ घर–घर जाकर गृहभेंट के दौरान समझायेगे की नयी पोषण नीति में हर दिन नया 7 दिन का पौष्टिक आहार दिया जाता है उसमें सभी प्रकार के पौष्टिक तत्व उपलब्ध रहते हैं। • ग्राम सभा में बात रख सकते है कि सभी वार्ड के पंच अपने–अपने वार्ड से महिलाएं अपने बच्चों को लेकर आंगनबाड़ी जाने के लिये प्रेरित करे, • परिवर्तनकर्ता 20 घरो के अंदर अपने–अपने बच्चो को आगनबाड़ी में भेजे, • 6 माह से 3 वर्ष के बच्चो के लिये शासन से सूखा पूरक पोषण आहार, • बच्चो को तरल चीजे और पौष्टिक भोजन दे साथ ही भोजन में सूखा राशन वितरण किया जाये। • सप्ताह में एक दिन फल, दूध, ब्रेड अंडा दिया जावे। खिचड़ी बनाकर तेल, घी का प्रयोग करे। सामुदायिक बैठक– बच्चो के माता–पिता एवं परिवार, पंचायत सदस्य, सरपंच, मा.स.स. इनकी बैठक लेकर। • बच्चे केन्द्र पर नहीं आते तो हर वार्ड हर गली में परिवर्तनकर्ता, मातृ सहयोगिनी समिति और पंच को बताया गया कि बच्चे स्कूल नहीं आ रहे है आप सभी लोग सहयोग करे जिससे बच्चे केन्द्र पर आयेगे। • घर पर जो खाना खाते है उसमें पोषक तत्व की कमी रहती है उसकी पूर्ति के लिये पूरक पोषक आहार देते है आइये आप । • उम्र के अनुासर बच्चों को पोषण आहार देवे। निश्चित करें ताकि 6 माह से 3 वर्ष के बच्चों को लाभ मिल सके। • 6 माह से 3 वर्ष के बच्चो को लाभान्वित करने के लिये हम मातृ सहयोगिनी एवं जन समुदाय से केन्द्र तक आने के लिये बच्चे के पालक को प्रेरित करे। • समुदाय को जोड़ने के लिये हम आंगनबाड़ी केन्द्र में हम कोई धार्मिक कार्यक्रम महिलाओं के माध्यम से रखे जिसमें समुदाय को आंमत्रित करेगें जिसके माध्यम से आंगनवाड़ी संबंधी बातों का आदान प्रदान हो सकता एवं महिलाओं को प्रोत्साहन सामग्री वितरण किया जाये। • 6 माह से 3 वर्ष के बच्चो के लिये साप्ताहिक तैयार पोषण आहार वितरण किया जाये।

अनुशंसाएँ

इस पूरी प्रक्रिया से काफी ऐसी बातें निकल कर सामने आती हैं जिन्हें अनुशंसाओं के रूप में देखा जा सकता है सारे सुझावों के निचोड से स्पष्ट है कि परिवर्तन के लिए गंभीरतम प्रयासों की आवश्यकता है। आई.सी.डी.एस. जो जिसे कि गॉवों और समुदाय के केंद्र में होना चाहिए कुछ – कुछ सामूदायिक दायरे से दूर दिखायी देता है, जहॉ यह समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित कर पाया है परिणाम बेहतर हैं। आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं के इस प्रस्तुतिकरण से झलक दिखायी देती है कि समझ का स्तर बेहतर है और भी बेहतर हो सकता है कुछ छोटे–छोटे प्रयास किये जाने चाहिए जैसे :

- प्रभावी गृहभेंट को सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक स्तर पर विश्लेषण की आवश्यकता है, इस प्रकिया से जुडे हर अंग को जिसमें पर्यवेक्षक, परियोजना अधिकारी और जो भी इससे जुडा है सतत आलोचनात्मक विश्लेषण करें।
- आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं को समय समय पर बेहतर प्रशिक्षण की आवश्यकता है जो उनकी क्षमताओं को में निखार ला सकता है साथ ही नयी नयी प्रकियाओं को जन्म दे सकता है। प्रशिक्षण की पद्धति छात्र और शिक्षक प्रणाली पर आधारित ना होकर आपसी सहभागिता से सीख पर आधारित हो जिसमें परामर्श और समझाईश पर अधिक जोर दिया जावे।
- सामूदायिक जुडाव से स्वास्थ्य व्यवहारों में सुधार लाया जा सकता है यदि आंगनवाडी केंद्रों में होने वाले आयोजन सिर्फ कुछ गिने चुने लोगों (जैसे पंचायत के सरपंच और सचिव, मात्र सहयोगिनी समिति के अध्यक्ष) तक ही सिमट कर ना रह जाये बल्कि सामूदायिक भागीदारी को बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- छोटी–छोटी बातों जैसे केंद्र की साज सज्जा, सफाई, समय और कार्य की पारदर्शिता समुदाय के बीच हो। सामूदायिक जवाबदेही के लिए जरूरी है कि केंद्र की सेवाओं और संसाधनों में पारदर्शिता हो।

- पंचायत और अन्य समुदाय आधारित संगठनों के जुडाव और मार्गदर्शन के लिए ठोस कदम उठाने की जरूरत है, प्रतीकात्मक भागीदारी स्थायी रूप नहीं ले सकती। वार्ड आधारित जानकारियॉ संबंधित वार्ड पंच को उपलब्ध करायी जावे जिससे बच्चे स्वास्थ्य एवं पोषण सुविधाओं से वंचित ना रहें और केंद्र में बच्चों की उपस्थिति बढ़ सके।
- आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं को अत्यधिक प्रोत्साहन और सहयोग की जरूरत है जिससे वे कार्यो को लेकर सहज महसूस करें और अपनी जवाबदेही को समझें।
- सामाजिक नक्शे का अद्यतन जिससे पोषण और स्वास्थ्य सुविधाओं के वर्तमान स्तर की जानकारी प्राप्त हो सके।
- आंगनवाडी कार्यकर्त्ताओं द्वारा टोले मजरों में विधि प्रदर्शन एवं संयुक्त भ्रमण (महिला बाल विकास विभाग और स्वास्थ्य विभाग के पर्यवेक्षक, आंगनवाडी कार्यकर्त्ता, ए.एन.एम., आशा और मातृ सहयोगिनी समिति के सदस्यगण) का आयोजन।

AWW- one day orientation at block level

Participants- Aaganwadi Workers, Supervisors, NGO staff & CDPO.

Organizer- CARE and W& CD Balaghat.

Objectives: -

- To refresh the knowledge of AWWs on Home based newborn care.
- To enhancing counseling of AWWs on breast-feeding.
- To emphasis the importance of home visit during critical period.

Process: -

- Assess the knowledge of the AWWs through the Quiz.
- Two-way communication to involve the AWWs in the New born care session.
- Demonstrate the AWWs about effective breast-feeding.
- Feeding demonstration for the age of 6 month child and on wards through Ahar Kit.
- Counseling session for effective home visit through role-play.
- Open forum discussion and finalize the mode of monitoring system.

Outcomes: -

- AWW Start doing home visits during critical period.
- Promote behavior indicators among beneficiaries.
- Promote institutional deliveries.
- Start involving the Matra Sahyogini Sammittee & PRI members.
- Ensure the quality of Innovations.

Agenda: -

SN	Topic	Content	Facilitator
1	Well- Come		CDPO-
2	CARE-Efforts	Process of working with system	Program officer (CARE)
3	Quiz contest	Program activities and Behavior related	NGO-Project Coordinator
4	New Born care	Home based new born care [Jeevan ki Asha]	Program officer (CARE)
5	Breast Feeding	Importance of mother milk	Program officer (CARE)
6	Feeding Demonstration	Ahar Kit and practical demonstration	NGO-Project Coordinator
7	Importance of home Visit & effective Counseling	Role Play	Program officer (CARE)
8	How to reduce the Malnutrition	Group Exercise	
9	Vote of Thanks		